Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۸﴾

(अल् ईनाम :28)

अनुवाद और काश तू देख सकता कि जब वे आग के पास (ज़रा) ठहराए जाऐंगे तो कहेंगे हे काश! ऐसा होता कि हम वापस लौटा दिए जाते, फिर हम अपने रब की आयात की तक़ज़ीब न करते और हम मोमिनीन में से हो जाते।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 7
अंक- 8

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

22 रजब 1443 हिज्री कमरी, 24 तब्लीग़ 1401 हिज्री शम्सी, 24 फ़रवरी 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मदीना की फ़ज़ीलत

(1871) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे ऐसी बस्ती (में जाने) का हुक्म हुआ जो दूसरी बस्तियों को खा जायेगी। उसे यसरब कहते हैं और वह (बस्ती) मदीना है जो (बुरे) लोगों को (रद्दी की तरह) निकाल देगी, जिस तरह भट्टी लोहे की मेल कुचैल को निकाल देती है।

नोट : हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इसकी व्याख्या में फ़रमाते हैं : मदीना की हुर्मत उसी अवस्था में पूर्णता रह सकती थी कि उपद्रवी वर्ग इस में न रहे। बाद की घटनाओं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन का शब्दशः सत्यापन किया। यहूदी क़बायल ने अनुबंध तोड़ा और बैरूनी दुश्मनों से गुप्त साज़िशें करके मदीना पर हमला करवाया अंततः अपनी ग़द्दारी के नतीजा में एक के बाद एक मदीना से निकाल दिए गए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनों का दूसरा हिस्सा भी उस वक़्त पूरा हुआ जब मदीना आलमे इस्लामी का प्रथम मर्कज़ बना और ख़ुलफ़ाए राशेदीन के पवित्र समय में अज़ीमुश्शान फ़ुतूहात हासिल हुईं। दूसरी बस्तियों को खा जाने का अर्थ भी यही है कि वह विजयी हो जाएँगे। (बुख़ारी, भाग 3 किताब फ़ज़ायल अल् मदीना, मुद्रित 2008 ई.)

★ ★ ★

एक मुसलमान के लिए आवश्यक है कि इस ज़माना के मध्य जो फ़ित्ना इस्लाम पर पड़ा हुआ है उसके दूर करने में कुछ हिस्सा ले

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

अटल बात

फ़रमाया "अभी हमारे मुख़ालिफ़ों में से बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जिनका हमारी जमाअत में दाख़िल होना सुनिश्चित है। वे मुख़ालिफ़त करते हैं पर फ़रिश्ते उनको देखकर हंसते हैं कि तुम अंततः इन ही लोगों में शामिल हो जाओगे। वह हमारी गुप्त जमाअत है जो कि हमारे साथ एक दिन मिल जाएगी।"

इस ज़माना की बड़ी इबादत

"एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि इस ज़माना के मध्य जो उपद्रव इस्लाम पर पड़ा हुआ है उसके दूर करने में कुछ हिस्सा ले जाए। बड़ी इबादत यही है कि इस फ़ित्ना के दूर करने में हर एक हिस्सा ले। इस वक़्त जो बुराइयाँ और गुस्ताख़ियाँ फैली हुई हैं, चाहिए कि अपनी तक़रीर और ज्ञान के साथ और हर एक क़ुव्वत के साथ जो उसको दी गई है मुख़लिसाना कोशिश के साथ इन बातों को दुनिया से उठावे। यदि इसी दुनिया में किसी को आराम और लज़्ज़त मिल गई तो क्या फ़ायदा। अगर दुनिया में ही प्रतिफल पा लिया तो क्या हासिल। परलोक का सवाब लो, जिस की इंतिहा नहीं। हर एक को ख़ुदा की तौहीद और तफ़रीद के लिए ऐसा जोश होना चाहिए। जैसा ख़ुद ख़ुदा को अपनी तौहीद का जोश है। ग़ौर करो कि दुनिया में इस तरह का मज़लूम कहाँ मिलेगा। जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अलैहि वसल्लम हैं। कोई गंद और गाली और अपशब्द नहीं जो आपकी तरफ़ न फेंका गया हो। क्या यह वक़्त है कि मुसलमान ख़ामोश हो कर बैठे रहें? अगर इस वक़्त में कोई खड़ा नहीं होता और हक़ की गवाही देकर झूठे के मुँह को बंद नहीं करता और जायज़ रखता है कि काफ़िर बे-हयाई से हमारे नबी पर आरोप लगाता जाए और लोगों को गुमराह करता जाए तो याद रखो कि वह बे-शक बड़ी बाज़पुर्स के नीचे है। चाहिए कि जो कुछ इलम और वाक़फ़ीयत तुमको हासिल है वह इस राह में ख़र्च करो और लोगों को इस मुसीबत से बचाओ। हदीस से साबित है कि अगर तुम दज्जाल को न मारो तब भी वह तो मर ही जाएगा। कहावत मशहूर है हर कमाले राज़ वाले। तेरहवीं सदी से ये आफ़तें शुरू हुईं और अब वक़्त क़रीब है कि इस का ख़ातमा हो जाए हर एक का फ़र्ज़ है कि जहां तक हो सके पूरी कोशिश करे। नूर और रोशनी लोगों को दिखाए।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम पृष्ठ 355- 356 से 357 मुद्रित 2018 क़ादियान)

अगर समस्त संसार एक ज़ंजीर की कड़ियों पर आधारित है तो उसका बनाने वाला एक ही ख़ुदा स्वीकार करना पड़ेगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः नहल आयत 23 اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : यह जो फ़रमाया कि तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है। यह ख़ाली दावा नहीं। क़ुरआन-ए-करीम जब मुनकिरों से ख़िताब करता है तो केवल दावा पेश नहीं करता क्योंकि उन पर ख़ाली दावा का असर नहीं हो सकता बल्कि वह ऐसे मौक़ा पर दो में से एक तरीक़ इख़्तियार करता है या तो दावा बयान करने के बाद ही उसके दलायल देता है या दलायल बयान कर के बाद में इसका नतीजा पेश करता है और यही दो तिब्बी तरीक़ हैं जिनसे इन्सानी दिमाग़ तसल्ली पाता है और दोनों अपने अपने रंग में अत्यधिक प्रभावी हैं । कई बार दावा बयान करके बाद में दलायल देना मुफ़ीद होता है और कई बार वाक़ियात बयान कर के बाद में उनका तिब्बी नतीजा वर्णन करना मुफ़ीद होता है। इस जगह दूसरा तरीक़ इख़्तियार किया है और पहली आयात का अकली नतीजा पेश किया है।

पहली आयात में दो मज़मून वर्णन हुए हैं। एक तो यह कि सब कायनात एक ही रिश्ता में पिरोई हुई है और एक चीज़ का दूसरी पर इन्हिसार है। इन्सान का जन्म असल है। उसका प्रथम आहार हैवानी है। हैवान वृक्षों इत्यादि से आहार हासिल करते हैं। आगे वे दरख़्त और बूटियाँ आसमानी पानी से पलते हैं और वे पानी इन्सान के पीने के काम भी आता है। फिर उसी पानी से वनस्पति उगती हैं जो इन्सान की ग़िज़ा बनती हैं। ये सब वस्तुएं रात-दिन सूरज चांद और सितारों के प्रभावों से फलती फूलती हैं। दूसरी तरफ़ उनके क़ियाम का माध्यम समुंद्र है जिस में पानी का ज़ख़ीरा रहता है और इस से पानी छन कर फिर इन्सानों को मिलता है और इस समुंद्र को अपने हाल पर रखने के लिए पहाड़ हैं जो पानी जमा रखते हैं। वहां से दरियाओं के माध्यम से पानी बहता है जो ख़ास रास्तों पर चल कर समुंद्र में आकर गिर जाता है और ज़मीन की सतह पर फैल नहीं जाता कि ज़मीन इन्सानों की रिहायश के काबिल न रहे। इन सब उमूर से एक वाज़िह

शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अहमदियत के मर्कज़ क़ादियान दारुल अमान में 126वें जलसा सालाना का सफ़ल और बाबरकत आयोजन

कोविड की महामारी ने दिलों के मैल दूर नहीं किए, अल्लाह तआला की इस वार्निंग से इन्सान कोई सबक़ हासिल नहीं कर रहा, अगर यही तरीक रहा तो बड़े ख़तरनाक परिणाम पैदा होंगे

आज मैं इस्लाम की अमन की शिक्षा के कुछ पहलू वर्णन करूँगा अगर उन पर अमल हो तो दुनिया अमन और सलामती का गहवारा बन सकती है

इस्लाम कहता है कि एक दूसरे के मज़हब के संस्थापकों को ग़लत कह कर उन पर आरोप न लगाओ
इस्लाम यह नहीं कहता है कि बाक़ी मज़हब झूठे थे, इस्लाम कहता है कि हर क़ौम में नबी आए, क़ुरआन-ए-करीम की आयत وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيۡهَا نَذِيۡرٌ ○ की रोशनी में मुसलमान हज़रत ईसा को हज़रत मूसा को या हिंदूओं के अवतारों को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं

इस्लाम कहता है कि हर मज़हब के मानने वाले की इज़्ज़त करो और हर मज़हब के संस्थापक की इज़्ज़त करो

इस्लाम के बारे में एक ग़लत तसव्वुर क़ायम किया गया है कि इस्लाम शिद्दत-पसंद मज़हब है और इबतिदा में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए गए हालाँकि इस्लाम इसको नकारता है

इस्लाम ने इस दुनिया में इस्लाम स्वीकार न करने की वजह से किसी को सज़ा नहीं दी,अगर आज भी मुसलमानों के अमल इस शिक्षा के अनुसार हो जाएं तो दुनिया की इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा हो जाए

सुधार मद्दे नज़र होनी चाहिए, देखना चाहिए कि क्या सज़ा देने से इस्लाह होती है या माफ़ करने से, उद्देश्य इस्लाह होनी चाहिए
इस्लाम कहता है कि हर किस्म के लेन-देन में दूसरे के हुक़ूक़ का ख़्याल रखो

इस्लाम कहता है धमंड न करो, लोगों को ज़लील, हक़ीर न समझो, घमंड करके कोई वास्तविक स्थान नहीं मिलता
विनम्रता ही है जो वास्तविक सरदारी देती है, यही सरदारी है जो हमेशा अमन क़ायम करने वाली बन सकती है

जलसे की बरकात को भी शामिल होने वाले साथ लेकर जाने वाले हों, दुनिया में हर जगह इस जलसे के प्रोग्राम को सुनने वाले एक जोश और जज़बा अपने अंदर पैदा करने वाले हों और अपने इलाक़ों में इस्लाम की पाक शिक्षा की रोशनी में एक इन्क़िलाब पैदा करने वाले बन जाएं

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इंटरनैशनल के माध्यम से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जलसे में शामिल होने वालों से बसीरत अफ़रोज़ समापन भाषण

कोविड के हालात की वजह से हज़ूर अनवर का मार्गदर्शन और हुकूमती गाइड लाइन के अधीन सीमित पैमाने पर जलसे का आयोजन हुआ लेकिन लाईव इस्ट्रियमिंग के माध्यम से जलसा से व्यापक लाभ * लाईव एस्ट्रियमिंग के माध्यम से एक लाख, छः हज़ार, छः सौ छयालीस लोगों ने जलसे की कार्रवाई देखी सुनी * 8 देशों की नुमाइंदगी* नमाज़ तहज्जुद* दर्सुल क़ुरआन और ख़ुदा का ज़िक्र इलाही से परिपूर्ण माहौल * उल्मा किराम के ज्ञान से परिपूर्ण भाषण * 6 मुल्की भाषाओँ में जलसा के प्रोग्रामों का अनुवाद * अहबाब जमाअत की मालूमात में बढ़ोतरी के लिए तर्बीयती उमूर पर मुश्तमिल वृत्तचित्र और मुख़्तलिफ़ मालूमाती नुमाइशों का आयोजन * निकाहों के ऐलानात * प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडीया में जलसे की कवरेज * पुरसुकून और ख़ुशगवार मौसम में जलसे की समस्त कार्रवाई की तकमील*

(भाग द्वितीय) रिपोर्ट : मंसूर अहमद मसरूर (मुंतज़िम रिपोर्टिंग)

★ हुज़ूर-ए-अनवर ने हिन्दुस्तानी वक़्त के अनुसार शाम 5 बजकर 25 मिनट पर दुआ करवाई और इस्लामाबाद और क़ादियान के अतिरिक्त दुनिया के समस्त स्थानों में बसने वाले अहमदी मुसलमान एम.टी.ए के माध्यम से अपने इमाम के साथ में दुआ में शामिल हुए।

★ दुआ के बाद हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इस वक़्त वहां जो जलसा गाह में बैठे हुए लोग हैं उनकी हाज़िरी 2118 है, 8 देशों की नुमाइंदगी है, इस के अतिरिक्त भी लोग मुख़्तलिफ़ जगहों पर वहां बैठे हुए जलसा सुन रहे हैं उनकी संख्या काफ़ी है। कुल संख्या वहां क़ादियान में जलसा सुनने वालों की शायद 6 हज़ार से ज़्यादा ही होगी।

★ इसके बाद हुज़ूर अनवर ने प्रेम के साथ तराना पेश करने की इजाज़त अता फ़रमाई। मर्दाना जलसा गाह से 8 ग्रुपस और लजना के जलसा गाह से दो ग्रुपस ने उर्दू, अरबी और कश्मीरी भाषा में तराने पेश किए। शेष पृष्ठ10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

ख़ुदा के नबी की शान यह नहीं है कि वह हथियार लगा कर फिर उसे उतार दे पूर्व इसके कि ख़ुदा कोई निर्णय करे

अतः अब अल्लाह का नाम लेकर चलो और अगर तुम ने सब्र से काम लिया तो विश्वास रखो कि अल्लाह तआला की सहायता तुम्हारे साथ होगी (अल् हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत अबूबक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के कमालात और मनाक़िब-ए-आलीया

मदीना पहुंचने के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सबसे पहले मस्जिद के निर्माण की तरफ़ तवज्जा फ़रमाई

तारीख़ में यह वर्णन मिलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा में दो मर्तबा भाईचारा क़ायम फ़रमाया, एक दफ़ा हिज्रत से पहले मक्का में और दूसरी दफ़ा मदीना में

ग़ज़वा-ए-बदर के लिए रवानगी के वक़्त सहाबा के पास सत्तर ऊंट थे इसलिए एक-एक ऊंट तीन-तीन आदमियों के लिए निर्धारित किया गया और हर एक बारी बारी सवार होता था

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऊंट पर बारी बारी सवार होते थे

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु साएबान में नंगी तलवार सौंत कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास हिफ़ाज़त के लिए खड़े रहे "और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रात-भर ख़ुदा के हुज़ूर रौ रौ कर दुआएं कीं और लिखा है कि सारे लश्कर में केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही थे जो रात-भर जागे बाक़ी सब लोग बारी बारी अपनी नींद सो लिए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आजकल हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा है। मदीना पहुंचने के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सबसे पहले मस्जिद के निर्माण की तरफ़ तवज्जा फ़रमाई। इसलिए इस बारे में सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह लिखा है कि मदीना के क़ियाम का सबसे पहला काम मस्जिद नब्वी का निर्माण था। जिस जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊंटनी आकर बैठी थी वह मदीना के दो मुसलमान बच्चों सहल और सुहेल की मिल्कियत थी जो हज़रत असद बिन ज़ुरारह रज़ियल्लाहु अन्हो की निगरानी में रहते थे। यह एक बंजर जगह थी जिसके एक हिस्सा में कहीं कहीं ख़जूरों के दरख़्त थे और दूसरे हिस्सा में कुछ खन्डरात इत्यादि थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे मस्जिद और अपने कमरों के निर्माण के लिए पसंद फ़रमाया और दस दीनार में (अर्थात उस वक़्त उस ज़माने में उसकी जो क़ीमत लगी थी वह कीमत आपने यहां रुपयों में लगाई थी) बहरहाल दस दीनार में ज़मीन ख़रीद ली गई और जगह को समतल करके और दरख़्तों को काट कर मस्जिद नब्वी का निर्माण शुरू हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद दुआ मांगते हुए संग-ए-बुनियाद रखा और जैसा कि क़बा की मस्जिद में हुआ था सहाबा ने वृद्धों और मज़दूरों का काम किया जिसमें कभी कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद भी शिरकत फ़रमाते थे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 269)

जैसा कि वर्णन हुआ है कि मस्जिद के लिए और कमरों के लिए यह जो जगह थी यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दस दीनार में ख़रीदी थी और रिवायात में आता है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के माल से यह रक़म अदा की गई थी।

(अल् मवाहिबुल दुनियां, भाग1, पृष्ठ 316 بناء المسجد النبوی، मुद्रित मक्तबा इस्लामिया 2004 ई.)

मस्जिद के निर्माण के बारे में मज़ीद तफ़सील यूं मिलती है। निर्माण शुरू होने के वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दस्त-ए-मुबारक से एक ईंट रखी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया तो उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ईंट के साथ एक ईंट रखी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया जिन्हों ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की ईंट के साथ एक ईंट रखी। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो आए उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ईंट के साथ एक ईंट रखी।

एक और रिवायत में आता है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद निर्माण की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बुनियाद में एक पत्थर रखा और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि अपना पत्थर मेरे पत्थर के साथ रखो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया : अपना पत्थर अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के पत्थर के साथ रखो। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया अपना पत्थर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पत्थर के साथ रखो।

(सीरत हल्बिया, भाग 2, बाब अल् हिजरत, पृष्ठ 90 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002)

मुर्हरम 7/ हिज्री में जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ज़वा-ए-ख़ैबर से विजय हो कर लौटे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौसीअ और निर्माण नौ का इरशाद फ़रमाया। इस दफ़ा भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मिलकर मस्जिद के निर्माण में हिस्सा लिया।

(उद्धरित जुस्तजूए मदीना पृष्ठ 446 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़ पाकिस्तान)

अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना में मकानों के लिए ज़मीन अता फ़रमाई तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए उनके घर की जगह मस्जिद के पास निर्धारित फ़रमाई।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद, ابوبکر الصدیق"ومن بنی تیم بن مرّۃ بن کعب" ,पृष्ठ 93 "दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी बेरूत 1996 ई.)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के भाईचारे के बारे में रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया था।

(2 ،الاصابۃ فی معرفۃ الصحابۃ،पृष्ठ 190 ख़ारिजा बिन ज़ैद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य प्रेम भाईचारा क़ायम फ़रमाया। (अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद, भात तीन, पृष्ठ 93" अबू बक़र अल् सिद्दीक़" ومن بنی تیم بن مرّۃ بن کعب۔। दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी बेरूत 1996 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ भाईचारा मक्का में हुआ था। इसके बारे में रिवायत आती है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जो भाईचारे की रिवायत मिलती है यह भाईचारा मक्का में हुआ था। जैसा कि अल्लामा इब्ने असाकिर लिखते हैं कि मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाई। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह भाईचारा निरस्त कर दिया सिवाए दो भाईचारे के। वे दो भाईचारे क़ायम रहे जिनमें से एक आपके और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य था और दूसरा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य था।(तारीख़ दमिशक़ अल् कबीर लेइब्ने असाकिर भाग 16 हिस्सा-32 पृष्ठ 63 अब्दुल्लाह बिन उसमान बिन क़हाफ़ा, दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी बेरूत 2001 ई.)

भाईचारा कब हुआ? इस बारे में तारीख़ में यह वर्णन मिलता है कि भाईचारा दो मर्तबा हुआ। इसलिए सही बुख़ारी के शारे अल्लामा किस वर्णन करते हैं कि भाईचारा दो मर्तबा हुआ पहली मर्तबा हिज्रत से पूर्व मक्का में मुसलमानों के मध्य हुआ जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और अपने मध्य भाईचारे क़ायम फ़रमाए। फिर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरीन और अंसार के मध्य हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में भाईचारा क़ायम फ़रमाया। इब्ने साअद वर्णन करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सौ सहाबा के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया अर्थात पच्चास मुहाजिरीन और पच्चास अंसार के मध्य।

(उद्धरित इरशाद अल् सारी, शरह बुख़ारी, भाग 7 पृष्ठ 133 हदीस नंबर 3937 दारुल फ़िकर 2010 ई.)

ग़ज़व-ए-बदर और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु : इस बारे में वर्णन मिलता है कि ग़ज़व-ए-बदर रमज़ान 2 हिज्री अनुसार मार्च 623 ई. में हुई।

(सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम,पृष्ठ 349)

ग़ज़व-ए-बदर के लिए रवानगी के वक़्त सहाबा के पास सत्तर ऊंट थे इसलिए एक एक ऊंट तीन तीन आदमियों के लिए निर्धारित किया और हर एक बारी बारी सवार होता था। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऊंट पर बारी बारी सवार होते थे। (उद्धरित अल् सीरतुल अल् हल्बिया, बाब वर्णन, भाग 2 पृष्ठ 204 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बदर के लिए जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रवानगी फ़रमाई तो उसके वर्णन में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अबूसुफ़ियान के क़ाफ़िले की रोक-थाम के लिए मदीना से निकले जो शाम की तरफ़ से आ रहा था। जब मुसलमानों का क़ाफ़िला ज़ाफ़रान की वादी में पहुंचा, यह मदीना के इर्द गिर्द में सफ़ के क़रीब एक वादी है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ुरैश के बारे में ख़बर मिली कि वह अपने तिजारती क़ाफ़िला को बचाने के लिए निकल पड़े हैं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम से मश्वरा तलब किया और उनको यह ख़बर दी कि मक्का से एक लश्कर इंतिहाई तेज़ रफ़्तारी से निकल पड़ा है इस बारे में तुम क्या कहते हो? क्या लश्कर के मुक़ाबला में तिजारती क़ाफ़िला तुमको ज़्यादा पसंद है? उन्होंने कहा क्यों नहीं। अर्थात एक गिरोह ने कहा हम दुश्मन के मुक़ाबला में तिजारती क़ाफ़िले को ज़्यादा पसंद करते हैं। एक रिवायत में वर्णन मिलता है कि एक गिरोह ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमसे जंग का वर्णन क्यों नहीं किया ताकि हम उस की तैयारी कर लेते। हम तो तिजारती क़ाफ़िले के लिए निकले हैं। एक रिवायत में आता है कि उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आपको तिजारती क़ाफ़िले की तरफ़ ही जाना चाहिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुश्मन को छोड़ दें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख का रंग बदल गया। हज़रत अबू अयूब रज़ियल्लाहु अन्हु करते हैं कि इस आयत के नुज़ूल का कारण यही वाक़िया है कि كَمَآ اَخۡرَجَكَ رَبُّكَ مِنۡۢ بَيۡتِكَ بِالۡحَـقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيۡقًا مِّنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ لَـكٰرِهُوۡنَ(अल् अनफ़ाल **:6**)कि जैसे तेरे रब ने तुझे हक़ के साथ तेरे घर से निकाला था हालाँकि मोमिनों में से एक गिरोह उसे यक़ीनन नापसंद करता था। इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए और बात चीत की और बहुत उम्दा गुफ़्तगु की। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और गुफ़्तगु की और बहुत उम्दा गुफ़्तगु की। फिर हज़रत मक्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! जिसका अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया है उसी तरफ़ चलिए। हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हैं। अल्लाह की क़सम! हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह नहीं कहेंगे जैसा कि बनी इस्राईल ने मूसा से कहा था कि فَاذۡهَبۡ اَنۡتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوۡنَ(अल् मायदा **:25**) अर्थात जा तू और तेरा रब दोनों लड़ो हम तो यहीं बैठे रहेंगे। उन्होंने कहा कि हम लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मिलकर लड़ेगे जब तक हम में जान है। अल्लाह की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ नबी बना कर मबऊस फ़रमाया है अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमे ब्र्कुल गिमाद भी लेकर चलें तो हम

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ तलवारों से लड़ाई करते हुए चलते चले जाऐंगे यहां तक कि हम वहां पहुंच जाएं।

बर्कुल गिमाद से पाँच रात की दूरी पर एक शहर है जो समुंद्र से जुड़ा है। बहरहाल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख को देखा, वह इस बात पर चमक उठा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस बात पर बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए। (अल् सीरतुल हल्बिया, बाब باب ذکر مغازیہ, भाग 2 पृष्ठ 205-206 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (मोअज्जम अल् बुल्दान, भाग प्रथम, पृष्ठ 475 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ाफिरान से रवाना हुए और बदर के क़रीब पड़ाव किया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्हाब में से एक व्यक्ति सवार हुआ। इब्ने हशाम के अनुसार वह हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु थे। एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की बजाय हज़रत कतादा बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हु या हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु थे, यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अरब के एक बूढ़े व्यक्ति के पास रुके और उससे क़ुरैश के सम्बन्ध में और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उस के साथियों के बारे में पूछताछ की और यह कि उनके बारे में क्या ख़बर है?(अल् सीरातुल नबविय्या लेइब्ने हशाम पृष्ठ 421 ग़ज़्व बदर अल्कुबरा, वर्णन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबू बक़र يتعرفان अख़बार क़ुरैश, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 207 वर्णन मुग़ाज़िया, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

जब मैदान-ए-बदर में जमा हो गए तो वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए एक साएबान बनाया गया था। इसकी तैयारी के बारे में लिखा है "साद बिन माज़ रईस ओस की तजवीज़ से सहाबा ने मैदान के एक हिस्सा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वास्ते एक साएबान सा तैयार कर दिया और साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सवारी साएबान के पास बांध कर अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस साएबान में तशरीफ़ रखें और हम अल्लाह का नाम लेकर दुश्मन का मुक़ाबला करते हैं ... और साद रज़ियल्लाहु अन्हो और बाज़ दूसरे अंसार इसके गिर्द पहरा देने के लिए खड़े हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसी साएबान में रात व्यतीत की।" एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु साएबान में नंगी तलवार सौंत कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास हिफ़ाज़त के लिए खड़े रहे "और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रात-भर ख़ुदा के हुज़ूर रौ रौ कर दुआएं कीं और लिखा है कि सारे लश्कर में केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही थे जो रात-भर जागे। बाक़ी सब लोग बारी बारी अपनी नींद सो लिए।"(सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 357)(सुबुलुल हुदा, भाग 11 पृष्ठ 398 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी के बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत है। वे कहते हैं कि उन्होंने सहाबा के एक गिरोह से पूछा कि मुझे लोगों में से सबसे ज़्यादा बहादुर व्यक्ति के सम्बन्ध में बताओ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा तो लोगों ने उत्तर दिया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। जब बदर का दिन था हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए साएबान तैयार किया। फिर हमने कहा कि कौन है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रहे ताकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक कोई मुशरिक न पहुंच पाए तो अल्लाह की क़सम हम में से कोई आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब नहीं गया परन्तु हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार को सोंते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर के पास खड़े हो गए कि रसूलुल्लाह परन्तु के पास कोई मुशरिक नहीं पहुँचेगा परन्तु पहले वह अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु से मुक़ाबला करेगा।

(अल् हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 214 बाब वर्णन मुग़ाज़िया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

इस विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक दफ़ा फ़रमाया कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु में सबसे ज़्यादा बहादुर और दिलेर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो थे और फिर उन्होंने कहा कि बदर के युद्ध में जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए एक अलैहदा चबूतरा बनाया गया तो उस वक़्त सवाल पैदा हुआ कि आज रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त का काम किस के सपुर्द किया जाए। इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो तुरन्त नंगी तलवार लेकर खड़े हो गए और उन्होंने इस इंतिहाई ख़तरा के अवसर पर निहायत दिलेरी के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त का फ़र्ज़ सरअंजाम दिया।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 7 पृष्ठ 364-365)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बदर के दिन एक बड़े ख़ेमे में थे कि اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ، اَللّٰهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ हे मेरे अल्लाह मैं तुझे तेरे ही अहद और तेरे ही वादे की क़सम देता हूँ। हे मेरे रब अगर तू ही मुसलमानों की तबाही चाहता है तो आज के बाद तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा। इतने में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लिया और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! बस कीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने रब से दुआ मांगने में बहुत इसरार कर लिया है और आप कवच पहने हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ेमा से निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह पढ़ रहे थे سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۔ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهٰى وَأَمَرُّ (अल् कमर:**46-47**) जल्द ये सब के सब शिकस्त खा जाऐंगे और पीठ फेर देंगे और यही वह घड़ी है जिससे डराए गए थे और ये घड़ी निहायत सख़्त और निहायत तल्ख़ है।

(सही बुख़ारी, किताब अल्जिहाद और सैर, باب ما قیل فی درع النبی ﷺ و القمیص فی الحرب, हदीस 2915)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे वर्णन किया कि बदर वाले दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुशरिकों को देखा वह एक हज़ार थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा तीन सौ उन्नीस थे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़िबला की तरफ़ मुँह किया। फिर अपने दोनों हाथ फैलाए और अपने रब को बुलंद आवाज़ से पुकारते रहे।

اَللّٰهُمَّ أَنْجِزْ لِي مَا وَعَدْتَنِي اَللّٰهُمَّ آتِ مَا وَعَدْتَنِي اَللّٰهُمَّ إِنْ تُهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ مِنْ أَهْلِ الْإِسْلَامِ لَا تُعْبَدْ فِي الْأَرْضِ

अर्थात अल्लाह! जो तू ने मेरे साथ वादा किया है उसे पूरा फ़र्मा। हे अल्लाह जो तू ने मुझ से वादा किया है वह मुझे अता फ़र्मा। हे अल्लाह अगर तू ने मुसलमानों का यह गिरोह हलाक कर दिया तो ज़मीन पर तेरी इबादत नहीं की जाएगी। क़िबले की तरफ़ मुँह किए दोनों हाथ फैलाए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नियमित अपने रब को बुलंद आवाज़ से पुकारते रहे यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चादर आप के कंधों से गिर गई। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चादर उठाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कंधों पर डाल दी। फिर आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पीछे से चिमट गए और अर्ज़ किया, हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपने रब के हुज़ूर दर्द से भरी हुई दुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए काफ़ी है। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किए गए वादे अवश्य पूरे फ़रमाएगा। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई إِذْ

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ (अल् अन्फाल : 10) याद करो जब तुम अपने रब से फ़र्याद कर रहे थे उसने तुम्हारी इल्तिजा को क़बूल कर लिया इस वादे के साथ कि मैं अवश्य एक हज़ार क़तार दर क़तार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा। अतः अल्लाह ने मलाइका के साथ आपकी मदद फ़रमाई।

(सही मुस्लिम, किताब अल्-जिहाद और सेर, باب الامداد بالملائكة فی غزوة بدر و اباحة الغنائم، हदीस नंबर 4588)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने बदर के वाक़िया का वर्णन करते हुए यह तफ़सील इस तरह वर्णन फ़रमाई है। लिखते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा से संबोधित हो कर यह भी फ़रमाया कि लश्कर कुफ़्फ़ार में कुछ ऐसे लोग भी शामिल हैं जो अपने दिल की ख़ुशी से इस मुहिम में शामिल नहीं हुए बल्कि क़ुरैश के सरदार के दबाव की वजह से शामिल हो गए हैं अन्यथा वे दिल में हमारे मुख़ालिफ़ नहीं। इसी तरह कुछ ऐसे लोग भी इस लश्कर में शामिल हैं जिन्हों ने मक्का में हमारी मुसीबत के वक़्त में हम से शरीफ़ाना सुलूक किया था और हमारा फ़र्ज़ है कि उनके एहसान का बदला उतारें। अतः अगर किसी ऐसे व्यक्ति पर कोई मुसलमान ग़लबा पाए तो उसे किसी किस्म की तकलीफ़ न पहुंचाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुसूसियत के साथ क़िस्म अव्वल में अब्बास बिन अब्दुल मुत्लिब और क़सम सानी में اَبُو الْبَخْتَرِی का नाम लिया और उनके क़तल से मना फ़रमाया परन्तु हालात ने कुछ ऐसी नागुरेज़ शकल इख़्तियार की कि اَبُو الْبَخْتَرِی क़तल से बच नहीं सका जबकि उसे मरने से क़बल इस बात का ज्ञान हो गया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके क़तल से मना फ़रमाया है।" सहाबा से यह फ़रमाने के बाद ".... आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम साइबान में जाकर दुआ में व्यस्त हो गए। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ थे और साएबान के इर्द-गिर्द अंसार की एक जमाअत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के अधीन पहरे पर निर्धारित थी। थोड़ी देर के बाद मैदान में से एक शोर बुलंद हुआ और मालूम हुआ कि क़ुरैश के लश्कर ने आम हमला कर दिया है। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम निहायत रिक़्क़त की हालत में ख़ुदा के सामने हाथ फैलाए हुए दुआएं कर रहे थे और निहायत बेचेनी की हालत में फ़रमाते थे कि اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ اَللّٰهُمَّ اِنْ تُهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ مِنْ اَهْلِ الْاِسْلَامِ لَا تُعْبَدْ فِي الْاَرْضِ। हे ख़ुदा! अपने वादों को पूरा कर। हे मेरे मालिक अगर मुसलमानों की यह जमाअत आज इस मैदान में हलाक हो गई तो दुनिया में तुझे पूजने वाला कोई नहीं रहेगा। और इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस क़दर बेचेनी की हालत में थे कि कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सजदा में गिर जाते थे और कभी खड़े हो कर ख़ुदा को पुकारते और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चादर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कंधों से गिर गिर पड़ती थी और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु उसे उठा उठा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर डाल देते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे लड़ते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़्याल आता था तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साएबान की तरफ़ भागा जाता था लेकिन जब भी मैं गया मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सजदा में गिड़गिड़ाते हुए पाया और मैं ने सुना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़बान पर ये शब्द जारी थे कि ये يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ अर्थात हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ज़िंदगी बख़श आक़ा हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस हालत को देख कर बेचैन हुए जाते थे और कभी कभी सहसा अर्ज़ करते थे हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर फ़िदा हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घबराएँ नहीं। अल्लाह अपने वादे अवश्य पूरे करेगा। परन्तु इस सच्चे कथन के अनुसार कि هر که عارف تر است ترسان تر" अर्थात हर कोई जितना विवेक रखता है उतना ही वह डरता है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बराबर दुआ और प्राथना में व्यस्त रहे।"
(सीरत ख़ातमु नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 360-361)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "बदर के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो ज़हूर में आया वह भी चश्म-ए-बसीरत रखने वालों की आँखों को हैरान करने के लिए काफ़ी है और इससे मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में अल्लाह तआला का किस क़दर भय था। बदर के युद्ध के अवसर पर जबकि दुश्मन के मुक़ाबला में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने जांनिसार बहादुरों को लेकर पड़े हुए थे। ताईद-ए-इलाही के आसार ज़ाहिर थे। कुफ़्फ़ार ने अपने क़दम जमाने के लिए पुख़्ता ज़मीन पर डेरे लगाए थे और मुसलमानों के लिए रेत की जगह छोड़ी थी लेकिन ख़ुदा ने बारिश भेज कर कुफ़्फ़ार के ख़ैमागाह में कीचड़ ही कीचड़ कर दिया और मुसलमानों की ज़मीन मज़बूत हो गई। इसी तरह और भी आकाशीय सहायता प्रकट हो रही थीं लेकिन बावजूद इसके अल्लाह तआला का भय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल पर ऐसा ग़ालिब था कि सब वादों और निशानात के बावजूद उसकी निस्पृहता को देखकर घबराते थे और व्याकुल हो कर उसके समक्ष दुआ फ़रमाते थे कि मुसलमानों को फ़तह दे। इसलिए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ... नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बदर के युद्ध में गोल ख़ेमा में थे और फ़रमाते थे कि हे ख़ुदा! मैं तुझे तेरे अह्द और वादे याद दिलाता हूँ और उनके वादा पूरा करने का तालिब हूँ। हे मेरे रब अगर तू ही (मुसलमानों की तबाही) चाहता है तो आज के बाद तेरी इबादत करने वाला कोई नहीं रहेगा।

इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लिया और अर्ज़ किया कि हे रसूल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! बस कीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो अपने रब से दुआ करने में हद कर दी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस वक़्त ज़िरह पहनी हुई थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खेमे से बाहर निकल आए और फ़रमाया कि अभी इन लश्करों को शिकस्त हो जाएगी और वे पीठ फेर कर भाग जाऐंगे बल्कि यह वक़्त उनके अंजाम का वक़्त है और ये वक़्त उन लोगों के लिए निहायत सख़्त और कड़वा है। अल्लाह अल्लाह! ख़ौफ़ ख़ुदा का ऐसा था कि बावजूद वादों के उसके मनोवृत्ति का ख़्याल था लेकिन यक़ीन भी ऐसा था कि जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की तो ऊँची आवाज़ में सुना दिया कि मैं डरता नहीं बल्कि ख़ुदा की तरफ़ से मुझे इल्म हो चुका है कि दुश्मन शिकस्त खा कर ज़लील-ओ-ख़ार होगा और कुफ़्र करने वाले लोग यहीं मारे जाऐंगे इसलिए ऐसा ही हुआ।"

(सीरतुं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अनवारुल उलूम, भाग 1, पृष्ठ 466-467)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को काफ़िरों पर फ़तह पाने का वादा दिया गया था परन्तु जब बदर की लड़ाई शुरू हुई जो इस्लाम की पहली लड़ाई थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रोना और दुआ करना शुरू किया और दुआ करते करते ये शब्द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह से निकले اَللّٰهُمَّ اِنْ اَهْلَكْتَ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ فَلَنْ تُعْبَدَ فِي الْاَرْضِ اَبَدًا अर्थात हे ख़ुदा! अगर आज तू ने इस जमाअत को (जो केवल तीन सौ तेराह थे) हलाक कर दिया तो फिर क़ियामत तक कोई तेरी बंदगी नहीं करेगा। इन शब्द को जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह से सुना तो अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस क़दर बेक़रार क्यों होते हैं? ख़ुदा तआला ने तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पक्का वादा दे रखा है कि मैं विजय दूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह सच्च है परन्तु उसकी निस्पृहता पर मेरी नज़र है अर्थात किसी वादा का पूरा करना ख़ुदा तआला पर हक़ वाजिब नहीं है।"
(बराहीन-ए-अहमदिया भाग 5, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 21, पृष्ठ255-256)

जब घमसान की जंग शुरू हो गई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तम्बू से बाहर तशरीफ़ लाए और लोगों को युद्ध पर उभारा। लोग अपनी सफ़ों में अल्लाह का वर्णन कर रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वंय ख़ूब क़िताल किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ साथ हज़रत अबू

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु क़िताल करते रहे।

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की बेनज़ीर बहादुरी सामने आई। आप रज़ियल्लाहु अन्हु हर सरकश काफ़िर से लड़ने के लिए तैयार थे जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का बेटा ही क्यों न हो। इस युद्ध में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे अब्दुर्रहमान कुफ़्फ़ार की ओर से लड़ने के लिए आए थे और अरब में सबसे बड़े बहादुरों में से एक समझे जाते थे और क़ुरैश में तीर-अंदाज़ी में सबसे बड़े माहिर थे। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो अपने पिता हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु से निवेदन किया : बदर के दिन आप मेरे सामने स्पष्ट निशान और हदफ़ पर थे लेकिन मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु से हट गया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल न किया तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अगर तू मेरे निशाने पर होता तो मैं तुझसे न हटता।

(सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, व्यक्तित्व और कारनामे अज़ अली मुहम्मद पृष्ठ 108-109 पुस्तकखाना अल् फ़ुर्कान पाकिस्तान)

इसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ खाने में शामिल थे कि अलग अलग उमूर पर बातें शुरू हो गईं। हज़रत अब्दुर्रहमान जो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के बड़े बेटे थे और जो बाद में मुसलमान हुए बदर या अहद की जंग में कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ाई में शरीक हुए थे। उन्होंने खाना खाते हुए बातों बातों में कहा कि अब्बा जान इस जंग में जब अमुक जगह से आप रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रे थे तो उस वक़्त मैं एक पत्थर के पीछे छुपा बैठा था और मैं अगर चाहता तो हमला कर के आप रज़ियल्लाहु अन्हु को हलाक कर सकता था परन्तु मैंने कहा अपने बाप को क्या मारना है। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया ख़ुदा ने तुझे ईमान नसीब करना था इस लिए तू बच गया अन्यथा ख़ुदा की क़सम! अगर मैं तुझे देख लेता तो अवश्य मार डालता।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 9, पृष्ठ 588)

आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बदर के युद्ध के क़ैदियों के सम्बन्ध में मश्वरा और इस में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की राय क्या थी? और इसके बाद हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की राय के अनुसार ही अमल किया गया। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "मदीना पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ैदियों के सम्बन्ध में मश्वरा किया कि उनके सम्बन्ध में क्या करना चाहिए। अरब में सधारणतः क़ैदियों को क़तल कर देने या मुस्तक़िल तौर पर ग़ुलाम बना लेने का दस्तूर था परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तबीयत पर यह बात सख़्त अनूचित गुज़रती थी और फिर अभी तक इस बारे में कोई इलाही आदेश भी नाज़िल नहीं हुए थे। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि मेरी राय में तो उनको फ़िद्या लेकर छोड़ देना चाहिए क्योंकि आख़िर यह लोग अपने ही भाई हैं और क्या ताज्जुब कि कल को इन्ही में से इस्लाम पर फ़िदा होने वाले पैदा हो जाएं। परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस राय का विरोध किया और कहा कि दीन के मामले में रिश्तेदारी का कोई पास नहीं होना चाहिए और या लोग अपने कर्मों से क़तल के मुस्तहिक़ हो चुके हैं। अतः मेरी राय में इन सबको क़तल कर देना चाहिए बल्कि हुक्म दिया जाए कि मुसलमान ख़ुद अपने हाथ से अपने अपने रिश्तेदारों को क़त्ल करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने फ़ित्री रहम से प्रभावित हो कर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को पसंद फ़रमाया और क़तल के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया और हुक्म दिया कि जो मुशरिकीन अपना फ़िद्या इत्यादि अदा कर दें उन्हें छोड़ दिया जाए। इसलिए बाद में इसी के अनुसार इलाही हुक्म नाज़िल हुआ।" (सीरत ख़ातामन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 367-368)

मदीना में एक दफ़ा हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा बीमार हो गए। इस बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की एक रिवायत है। आप रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को बुख़ार हो गया। कहती थीं मैं उन दोनों के पास गई और पूछा। अब्बा आप रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं के बारे में कैसा पाते हैं? और बिलाल तुम अपने आप को कैसा पाते हो? आप रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को बुख़ार होता तो यह शेअर पढ़ते

وَالْمَوْتُ أَدْنٰى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهٖ كُلُّ امْرِءٍ مُصَبَّحٌ فِيْ أَهْلِهٖ

हर व्यक्ति जो अपने घरवालों में सुबह को उठता है तो उसे सलामती की दुआएं दी जाती हैं और हालत यह है कि मौत उसकी जूती के तस्मा से नज़दीक-तर होती है। और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु जब उनका बुख़ार उतर जाता तो बुलंद आवाज़ से रो कर कुछ शेर पढ़ते थे जिसमें मक्का की इर्द-गिर्द की आबादियों का वर्णन होता और उसको याद कर रहे होते। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आई और सारा अहवाल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वर्णन किया अर्थात हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्या कहा और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु क्या कहते हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ की कि अल्लाह! मदीना भी हमें ऐसा ही प्यारा बना दे जैसा कि हमें मक्का प्यारा है या इससे भी बढ़कर और इस को सेहत बख़श मुक़ाम बना और हमारे लिए उसके साअ में और मुद् में बरकत दे। ये मुद् और साअ वज़न के पैमाने हैं और इसके बुख़ार को यहां से ले जा कर जोह्फ़ा की तरफ़ मुंतक़िल कर दे। जोह्फ़ा मक्का से मदीना की जानिब बयासी मील के फ़ासले पर एक जगह है।

(सही अल् बुख़ारी, किताब मनाक़िब الانصار بَابُ مَقْدَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ الْمَدِيْنَةَ, भाग 2 पृष्ठ 172 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

ग़ज़वा-ए-अहद के बारे में रिवायत हैं कि यह ग़ज़वा शवाल तीन हिज्री के अनुसार 624 ई. में मुसलमानों और क़ुरैश मक्का के मध्य हुआ। तीन हिज्री के आख़िर पर क़ुरैश मक्का और उनके हलीफ़ क़बीलों पर आधारित लश्कर के मदीना पर चढ़ाई की सूचना मिली। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को जमा करके क़ुरैश के हमला के बारे में आगाह करके उनसे मश्वरा मांगा कि मदीना में ही रह कर उनका मुक़ाबला किया जाए या बाहर निकला जाए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमं नबिय्यीन पृष्ठ 483-484)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस प्रकार लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को जमा करके उनसे क़ुरैश के इस हमला के सम्बन्ध में मश्वरा मांगा कि मदीना में ही ठहरा जाए या बाहर निकल कर मुक़ाबला किया जाए। मश्वरा से पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश के हमले और उनके ख़ूनी इरादों का वर्णन फ़रमाया और फ़रमाया कि आज रात मैं ने ख़ाब में एक गाय देखी है और तथा मैं ने देखा कि मेरी तलवार का सिर टूट गया है। और फिर मैंने देखा कि वह गाय ज़िबाह की जा रही है और मैं ने देखा कि मैंने अपना हाथ एक मज़बूत और महफ़ूज़ ज़िरह के अंदर डाला है और एक रिवायत में यह भी वर्णित है कि आपने फ़रमाया कि मैं ने देखा है कि एक मेंढा है जिसकी पीठ पर मैं सवार हूँ। सहाबा ने दरयाफ़त किया हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस ख़ाब की क्या ताबीर फ़रमाई है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। गाय के ज़िबाह होने से तो मैं यह समझता हूँ कि मेरे सहाबा में से कुछ का शहीद होना मुराद है और मेरी तलवार के किनारे के टूटने से मेरे अज़ीज़ों में से किसी की शहादत की तरफ़ इशारा मालूम होता है। या शायद ख़ुद मुझे इस मुहिम में कोई तकलीफ़ पहुंचे और ज़िरह के अंदर हाथ डालने से मैं यह समझता हूँ कि इस हमले के मुक़ाबले के लिए हमारा मदीना के अंदर ठहरना ज़्यादा मुनासिब है और मेंढे पर सवार होने वाले ख़ाब की आपने यह तावील फ़रमाई कि इस से कुफ़्फ़ार के लश्कर का सरदार अर्थात अलमबरदार मुराद है जो इंशा अल्लाह मुसलमानों के हाथों से मारा जाएगा।

इसके बाद आपने सहाबा से मश्वरा माँगा फ़रमाया कि मौजूदा स्थिति में क्या करना चाहिए? कुछ बड़े सहाबा ने हालात की ऊंच नीच को सोच कर और शायद किसी क़दर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ाब से प्रभावित हो कर यह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

राय दी कि मदीना में ही ठहर कर मुक़ाबला करना मुनासिब है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी इसी राय को पसंद फ़रमाया और कहा कि बेहतर यही मालूम होता है कि हम मदीना के अंदर रह कर उसका मुक़ाबला करें लेकिन अक्सर सहाबा ने वशेषता नौजवानों ने, जो बदर की जंग में शामिल नहीं हुए थे और अपनी शहादत से ख़िदमत-ए-दीन का अवसर हासिल करने के लिए बैचैन थे, बड़े इसरार के साथ अर्ज़ किया कि शहर से बाहर निकल कर खुले मैदान में मुक़ाबला करना चाहिए। इन लोगों ने इस क़दर इसरार के साथ अपनी राय पेश की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके जोश को देख कर उनकी बात मान ली और फ़ैसला फ़रमाया कि हम खुले मैदान में निकल कर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करेंगे और फिर जुमा की नमाज़ के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों में आम तहरीक फ़रमाई कि वह जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के उद्देश्य से इस ग़ज़वा में शामिल हो कर सवाब हासिल करें। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अंदर तशरीफ़ ले गए जहां हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इमामा बाँधा और लिबास पहना और फिर हथियार लगा कर अल्लाह का नाम लेते हुए बाहर तशरीफ़ ले आए लेकिन इतने अरसा में यह जो नौजवान थे उनको कुछ सहाबा के कहने पर अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि उन्हें रसूल-ए-ख़ूदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की राय के मुक़ाबला में अपनी राय पर ज़ोर नहीं देना चाहिए था। जब यह एहसास उनको हुआ तो अक्सर उनमें से शर्मिंदा हुए थे। जब उन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हथियार लगाए और दोहरी ज़िरह और ख़ुद इत्यादि पहने हुए तशरीफ़ लाते देखा तो उनको नदामत और भी ज़्यादा हो गई और उन्होंने क़रीबन एक ज़ुबान हो कर अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमसे ग़लती हो गई कि हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की राय के मुक़ाबला में अपनी राय पर ज़ोर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जिस तरह मुनासिब ख़्याल फ़रमाते हैं उसी तरह कार्रवाई फ़रमाएं। इन शा अल्लाह इसी में बरकत होगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

ख़ुदा के नबी की शान से यह बईद है कि वह हथियार लगा कर फिर उसे उतार दे क़बल इसके कि ख़ुदा कोई फ़ैसला करे। अतः अब अल्लाह का नाम लेकर चलो और अगर तुम ने सब्र से काम लिया तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला की नुसरत तुम्हारे साथ होगी। (उद्धरित सीरत ख़ातमं नबिय्यन पृष्ठ 484 से 486)

ग़ज़वा-ए-अहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार हाथ में लेकर फ़रमाया कि कौन है जो इसका हक़ अदा करे? इस अवसर पर जिन अस्हाब ने इस ख़ाहिश का इज़हार किया कि वह तलवार उनको प्रदान की जाए उनमें हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे।

(शरह ज़रक़ानी علی المواھب اللدنیہ, भाग 2 पृष्ठ 404 अहद के युद्ध, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

सीरत खातमं नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसका वर्णन यूं फ़रमाया है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी तलवार हाथ में ले कर फ़रमाया कौन है जो इसे लेकर उसका हक़ अदा करे। बहुत से सहाबा ने इस फ़ख़र की ख़ाहिश में अपने हाथ फैलाए। जिनमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु बल्कि रिवायत की दृष्टि से हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु व हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे। परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ रोके रखा और यही फ़रमाते गए। कोई है जो उसका हक़ अदा करे? आख़िर अबू दुज्जना अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे इनायत फ़रमाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह तलवार उन्हें दे दी।"

(सीरत खातमं नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 489)

ग़ज़वा अहद में जब कुफ़्फ़ार ने पलट कर हमला किया और मुसलमानों को शिकस्त उठानी पड़ी तो उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में भी यह ख़बर प्रसिद्ध हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं। इब्ने इसहाक़ का वर्णन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत के ऐलान और कुछ लोगों के मुंतशिर हो जाने के बाद सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की निगाह पड़ी। उनका वर्णन है कि मैं ने कवच के मध्य में से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चमकती हुई आँखें देख कर बुलंद आवाज़ से पुकारा मुसलमानो! ख़ुश हो जाओ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह हैं। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हाथ से इशारा किया कि ख़ामोश रहो। जब मुसलमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचान लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके साथ घाटी की तरफ़ रवाना हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा बिन उबयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हु इत्यादि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु थे। (उद्धरित तारीख़ अलतिबरी لابی جعفر محمد بن جریر طبری غزوہ احد भाग 3 पृष्ठ 70 दारुल फ़िकर बेरूत 2002 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अहद के दिन अपने सहाबा की एक जमाअत से मौत पर बैअत ली। जब बज़ाहिर मुसलमानों की पराजय हुई थी तो वह साबित-क़दम रहे और अपनी जान पर खेल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दिफ़ा करने लगे यहां तक कि उनमें से कुछ शहीद हो गए। इन बैअत करने वाले ख़ुश-नसीबों में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सालेह बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू दुज्जाना रज़ियल्लाहु अन्हु शामिल थे। (अल् असाबा, भाग 3 पृष्ठ 431 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

अहद के युद्ध के हालात का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने मज़ीद लिखा है कि "जो सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट जमा थे उन्होंने जो कुर्बानियां दिखाई तारीख़ उनकी नज़ीर लाने से आजिज़ है। ये लोग परवानों की तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द घूमते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ातिर अपनी जान पर खेल रहे थे। जो वार भी पड़ता था सहाबा अपने ऊपर लेते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बचाते थे और साथ ही दुश्मन पर भी वार करते जाते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बे-तहाशा दुश्मन पर हमले किए और उनकी सफ़ों को धकेल धकेल दिया। अबू तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर चलाते चलाते तीन कमानें तोड़ीं और दुश्मन के तीरों के मुक़ाबिल पर छाती सामने करके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बदन को अपनी ढाल से छुपाया। साद बिन वकास रज़ियल्लाहु अन्हु को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद तीर पकड़ाते जाते थे और साद रज़ियल्लाहु अन्हो ये तीर दुश्मन पर बे तहाशा चलाते जाते थे। एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों। बराबर तीर चलाते जाओ। साद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी आख़िरी आयु तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इन शब्दों को निहायत गर्व के साथ वर्णन किया करते थे। अबू दुज्जाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ी देर तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस्म को अपने जिस्म से छुपाए रखा और तीर या पत्थर आता था उसे अपने जिस्म पर लेते थे यहाँ तक कि उनका बदन तीरों से छलनी हो गया परन्तु उन्होंने उफ़ तक नहीं की ताकि ऐसा न हो कि उनके बदन में हरकत पैदा होने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म का कोई हिस्सा नंगा हो जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कोई तीर आ लगे। तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बचाने के लिए कई वार अपने बदन पर लिए और इसी कोशिश में उनका हाथ टुंडा कर हमेशा के लिए बेकार हो गया परन्तु यह कुछ गिनती के जांनिसार इस सेलाब -ए-अज़ीम के सामने कब तक ठहर सकते थे जो हर क्षण तेज़ ऊँची मौजों की तरह चारों तरफ़ से बढ़ता चला आता था। दुश्मन के हर हमला की हर लहर मुसलमानों को कहीं का कहीं बहा करले जाती थी परन्तु जब ज़रा ज़ोर थमता था मुसलमान बेचारे लड़ते भिड़ते फिर अपने महबूब आक़ा के गर्द जमा हो जाते थे। कभी कबार तो ऐसा ख़तरनाक हमला होता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अमलन अकेले रह जाते थे। इसलिए एक वक़्त ऐसा

आया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द गिर्द केवल बारह आदमी रह गए और एक वक़्त ऐसा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ केवल दो आदमी ही रह गए। इन जान निसारों में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु, अली रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, साअद रज़ियल्लाहु अन्हो बिन वक्क़ास, अबू दुज्जाना रज़ियल्लाहु अन्हु अंसारी, साद बिन माज़ बाज़-औक़ात और तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु अंसारी के नाम ख़ास तौर पर वर्णित हुए हैं।" (सीरत खातमं नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 495-496)

अहद के युद्ध के दौरान जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दंदाने मुबारक शहीद हुए तो उस वक़्त का जो नक़्शा हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने खींचा है इसके सम्बन्ध में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु जब अहद के दिन का वर्णन करते तो फ़रमाते वह दिन सारे का सारा तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का था। फ़रास की तफ़सील बताते कि मैं इन लोगों में से था जो अहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ वापस लौटे थे तो मैं ने देखा कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए लड़ रहा है। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बचा रहा था। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने कहा काश! तलहा हो। मुझ से जो अवसर रह गया वह रह गया और मैं ने दिल में कहा कि मेरी क़ौम में से कोई व्यक्ति हो तो यह मुझे ज़्यादा पसंदीदा है। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस वक़्त यह सोचा। कहते हैं और मेरे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मध्य एक व्यक्ति था जिस को मैं नहीं पहचान सका हालाँकि मैं उस व्यक्ति के सम्बन्ध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़्यादा क़रीब था और वह इतना तेज़ चल रहा था कि मैं इतना तेज़ न चल सकता था तो देखा कि वह व्यक्ति अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु थे। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का रबा ईदानियत अर्थात सामने वाले दो दाँतों और नोकीले दाँत के मध्य वाला दाँत टूट चुका था और चेहरा घायल था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाल मुबारक में ख़ुद की कड़ियाँ धँस चुकी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम दोनों अपने साथी की मदद करो। इससे आपकी मुराद तल्हा थी और उनका ख़ून बहुत बह रहा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बजाय यह कि मुझे देखो फ़रमाया कि तल्हा को जाके देखो। हमने उनको रहने दिया और मैं आगे बढ़ा ताकि ख़ुद की कड़ियों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख से निकाल सको। इस पर हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने हक़ की क़सम देता हूँ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु से मेरे लिए छोड़ दें। अतः मैंने उनको छोड़ दिया और अबू उबैदा ने नापसंद किया कि इन कड़ियों को हाथ से खींच कर निकालें और इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुंचे तो उन्होंने इन कड़ियों को अपने मुँह से निकालने की कोशिश की और एक कड़ी को निकाला तो कड़ी के साथ उनका अपना सामने का दाँत भी टूट गया। फिर दूसरी कड़ी निकालने के लिए में आगे बढ़ा कि में भी ऐसा ही करूँ जैसा उन्होंने किया है। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने कहा कि मैं भी इसी तरह दूसरी कड़ी निकालने की कोशिश करता हूँ तो हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हु फिर कहा कि मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने हक़ की क़सम देता हूँ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु से मेरे लिए छोड़ दें। उन्होंने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा तो फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु पीछे हट गए तो उन्होंने फिर वैसा ही किया जैसा पहले किया था तो अबू उबैदा का सामने का दूसरा दाँत भी कड़ी के साथ टूट गया। अतः अबू उबैदा सामने के टूटे हुए दाँतों वाले लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत थे।

फिर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ईलाज मुआलिजा से फ़ारिग़ हो कर तल्हा के पास आए। वह एक गढ़े में थे तो देखा कि उनके जिस्म पर नेज़े तलवार और तीरों के कम-ओ-बेश सत्तर ज़ख़म थे और उनकी उंगली भी कटी हुई थी तो हमने उनकी मरहम पट्टी की।(सुबुलुल हुदा भाग 4 पृष्ठ 199-200 ग़ज़वा अहद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (लुग़ात अल् हदीस ज़ेरे लफ़्ज़ रुबाई नुमानी, कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई.)

हज़रत अबू उबेदाह रज़ियल्लाहु अन्हु के अतिरिक्त हज़रत उक्बा बिन वहब और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में भी रिवायत में मिलता है कि उन्होंने ये कड़ियाँ निकलीं (शरह ज़रक़ानी, भाग 2 पृष्ठ 425 ग़ज़वा अहद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.) लेकिन बहरहाल पहली रिवायत ज़्यादा बेहतर है।

अहद के युद्ध के दिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा के साथ पहाड़ पर चढ़ गए तो कुफ़्फ़ार भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे आए। इसलिए सही बुख़ारी में रिवायत है कि अबू सुफ़ियान ने तीन बार पुकार कर कहा : क्या उन लोगों में मुहम्मद है (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)? नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा को उसे उत्तर देने से रोक दिया। फिर उसने तीन बार पुकार कर पूछा : क्या लोगों में अबू क़हाफ़ा का बेटा है अर्थात अबू बक़र? फिर तीन बार पूछा : क्या उन लोगों में इब्ने ख़त्ताब अर्थात उमर है? फिर वह अपने साथियों की तरफ़ लौट गया और कहने लगा ये जो थे वे तो मारे गए। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने आपको क़ाबू में न रख सके और बोले हे अल्लाह के दुश्मन! ख़ुदा की कसम तुमने झूठ कहा है। जिनका तुमने नाम लिया है वह सब ज़िंदा हैं। जो बात नागवार है इस में से अभी तेरे लिए बहुत कुछ बाक़ी है। (सही बुख़ारी, بَابُ الْجِهَادِ وَالسِّيَرِ بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّنَازُعِ وَالِاخْتِلَافِ فِي الْحَرْبِ، وَعُقُوبَةِ مَنْ عَصَى إِمَامَهُ, हदीस नंबर 3039)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घायल हो कर बेहोश होने और इसके बाद के वाक़िया का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "थोड़ी देर बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को होश आ गया और सहाबा ने चारों तरफ़ मैदान में आदमी दौड़ा दिए कि मुसलमान फिर इकट्ठे हो जाएं। भागा हुआ लश्कर फिर जमा होना शुरू हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें लेकर पहाड़ के दामन में चले गए। जब दामन-ए-कोह में बचा कुचा लश्कर खड़ा था तो अबूसुफ़ियान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू सुफ़ियान की बात का उत्तर नहीं दिया ताकि ऐसा न हो दुश्मन हक़ीक़त-ए-हाल से वाक़िफ़ हो कर हमला कर दे और घायल मुसलमान फिर दुबारा दुश्मन के हमला का शिकार हो जाएं। जब इस्लामी लश्कर से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़ियान को यक़ीन हो गया कि इसका ख़्याल दरुस्त है और उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हमने अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को भी मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को भी हुक्म फ़रमाया कि कोई उत्तर न दें। फिर अबू सुफ़ियान ने आवाज़ दी हम ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी मार दिया। तब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो बहुत जोशीले आदमी थे उन्होंने उस के उत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा के फ़ज़ल से ज़िंदा हैं और तुम्हारे मुक़ाबला के लिए तैयार हैं परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया कि मुसलमानों को तकलीफ़ में मत डालो और ख़ामोश रहो। अब कुफ़्फ़ार को यक़ीन हो गया कि इस्लाम के संस्थापक को भी और उनके दाएं बाएं बाज़ू को भी हमने मार दिया है। इस पर अबू सुफ़ियान और उसके साथियों ने ख़ुशी से नारा लगाया उलुल हुबल। उलुल हुबल। हमारे सम्मानित बुत हुबल की शान बुलंद हो कि उसने आज इस्लाम का अंत किया है।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "वही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो अपनी मौत के ऐलान पर, अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की मौत के ऐलान पर और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मौत के ऐलान पर ख़ामोशी की नसीहत फ़र्मा रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर फिर कुफ़्फ़ार का लश्कर लौट कर हमला कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं अब जबकि ख़ुदा-ए-वाहिद की इज़्ज़त का सवाल पैदा हुआ और शिर्क का नारा मैदान में मारा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह व्याकुल हो गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने निहायत जोश से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ देख कर फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते? सहाबा ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ۔ اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ तुम झूठ बोलते हो हुबल की शान बुलंद हुई' यह झूठ है तुम्हारा।" अल्लाह وحده لاشريك ही सम्मानित है और उसकी शान ऊँची है और इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने ज़िंदा होने की ख़बर दुश्मनों तक पहुंचा दी। इस दिलेराना

शेष पृष्ठ 11 पर

पृष्ठ02 का शेष

★ तरानों के बाद 5 बजकर 52 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया-भर के समस्त शमिल होने वालों को अस्सलामो अलैकुम का तोहफ़ा पेश किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर तशरीफ़ ले गए।

अल्लाह तआला हम सब को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के कीमती उपदेशों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

महिलाओं का जलसा

तिथि 25 दिसंबर 2021 ई. शनिवार के दिन महिलाओं का जलसा हुआ जिसकी सदारत श्रीमती बुशरा तय्यबा ग़ौरी साहिबा एज़ाज़ी मैंबर लजना इमाइल्लाह भारत ने की। तिलावत क़ुरआन-ए-मजीद श्रीमती अम्तुल हादी शीरीं साहिबा सहायक वाकिफ़ात-ए-नौ क़ादियान ने की और अनुवाद पेश किया श्रीमती अम्तुल बासित बुशरा साहिबा सैक्रेटरी तब्लीग़ इमाइल्लाह भारत ने नज़म "तुझे हम्दो सना ज़ेबा है प्यारे" कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुन्दर आवाज़ में पढ़ी। पहली तक़रीर श्रीमती ज़कीया तसनीम साहिबा नायब सदर लजना ज़िला भागलपुर और मुंगेर ने शीर्षक "इस्लामी घरेलू जीवन (तलाक़ और खुला का हल) इस्लामी तालीमात की रोशनी में" की।

इसके बाद एक नज़म श्रीमती वजीहा बशारत साहिबा ने "तेरी मुहब्बत में मेरे प्यारे हर इक मुसीबत उठाएँगे हम" कलाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के चुने हुए विशेष अशआर अत्यधिक सुन्दर आवाज़ से पढ़े।

इसके बाद जलसा की दूसरी तक़रीर श्रीमती बुशरा पाशा साहिबा सदर लजना इमाइल्लाह भारत ने शीर्षक "अहमदी महिलाओं की क़ुर्बानियां हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के खुत्बात की रोशनी में" की।

इसके बाद सदर-ए-इजलास ने अंतिम भाषण फ़रमाया जिस में आपने पैग़ाम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सालाना इजतिमा लजना इमाइल्लाह व नासरातुल अहमदिया भारत के अवसर पर की रोशनी में नसाएह फ़रमाएं दुआ के बाद जलसा की कार्रवाई सुख और शांति के साथ समाप्त हुई। अलहमदु लिल्लाह।

जलसा के दौरान हर दो तक़ारीर का अनुवाद अंग्रेज़ी, तामिल और मलयालम भाषा में किया गया। मलयालम भाषा में अनुवाद श्रीमती जुवेरिया गौहर शमस साहिबा सदर लजना ज़िला कँवर और कासर गौड़ केराला ने किया और तामिल भाषा में श्रीमती नजमा तारिक़ साहिबा और श्रीमती शायना मुबारक साहिबा ने अनुवाद किया जबकि अंग्रेज़ी में श्रीमती मलीहा शमीम साहिबा ने अनुवाद किया।

★ ★ ★

तिथि 22 दिसंबर से 28 दिसंबर मस्जिद अक्सा और मस्जिद अनवार में और जलसे के तीन दिन क़ादियान की समस्त मसाजिद में बा जमाअत नमाज़ तहज्जुद का इंतेज़ाम किया गया। तहज्जुद से पूर्व विभाग तर्बीयत की तरफ़ से लाऊड स्पीकर के माध्यम से दुरूद शरीफ़ और पाकीज़ा अशआर पढ़ कर नमाज़ तहज्जुद के लिए अहबाब को बेदार किया गया। नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद तफ़सीरे कबीर से क़ुरआन-ए-मजीद का दरस दिया गया। क़ादियान के समस्त मुहल्लों में और जलसा गाह में तर्बीयती बैनर्ज़ लगाए गए।

★ ★ ★

हुकूमती गाइडलाइन के अनुसार एक venue में 700 की संख्या को दृष्टिगत रखते हुए मर्दाना जलसा गाह के दो अलग अलग पंडाल सात सात सौ अफ़राद के लिए तैयार किए गए थे। महिलाओं के लिए भी सात सौ के बैठने की व्यवस्था रखी गई थी। इस वर्ष सब के लिए कुर्सीयों पर बैठने का इंतिज़ाम किया गया था। मर्दाना जलसा गाह में दो और लजना के जलसा गाह में एक बड़े साइज़ की led के माध्यम से जलसा सुनने का इंतिज़ाम था। कोविड प्रोटोकोल की पूरी पाबंदी की गई। जलसा गाह में 6 फुट के फ़ासले से कुर्सियाँ लगाई गईं।

★ ★ ★

मौसम विभाग की भविष्यवाणी के अनुसार तिथि 26 दिसंबर 2021 को बारिश थी। पहले इजलास के अंत से पूर्व ही हल्की बूंदाबांदी शुरू हो गई थी और दूसरे इजलास में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का अंतिम ख़िताब live प्रसारित होना था उसके लिए बड़ी फ़िक्र और परेशानी थी। इसलिए पहले इजलास की रिपोर्ट भिजवाते हुए मौसम के अच्छे रहने के लिए हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ की दरख़ास्त की गई। अल्लाह तआला ने हुज़ूर अनवर की दुआओं से मौसम को साज़गार बनाए रखा और बारिश नहीं हुई जिस से कि जलसा गाह पूरी तरह भरा रहा और हाज़िरीन ने बड़ी तवज्जा से हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुना। अलहमदु लिल्लाह अला ज़ालिक।

★ ★ ★

जलसा सालाना की मुकम्मल कार्रवाई लाईव एस्ट्रियमिंग के माध्यम से दिखाई जाती रही जिससे न केवल हिन्दुस्तान की जमाअतों ने भरपूर लाभ प्राप्त किया बल्कि बैरून-ए-मुल्क भी जलसा का प्रोग्राम देखा गया विभाग M.T.A के अनुसार एक लाख छः हज़ार छः सौ छयालीस अफ़राद ने जलसा सालाना की कार्रवाई देखी और सुनी।

★ ★ ★

इस वर्ष मेहमानों की रिहायश के लिए तक़रीबन 15 क़ियाम गाहें तैयार की गईं 34 निज़ामतों के नाज़िमीन, नायब नाज़िमीन और मुआवनीन दिन रात ख़िदमत बजा लाने में व्यस्त रहे।

★ ★ ★

जलसा गाह में जलसा की कार्रवाई का 6 भाषाओँ में अंग्रेज़ी, बंगला, कन्नड़, मलयालम, तामिल, तेलुगू में अनुवाद किया गया सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबा जुमा और अंतिम ख़िताब का रवां अनुवाद किया गया। लाईव एस्ट्रियमिंग के माध्यम से प्रसारित होने वाले प्रोग्राम का अनुवाद तामिल और मलयालम में किया जाता रहा। लजना इमाइल्लाह के जलसा की कार्रवाई का अनुवाद भी पाँच भाषाओँ में किया गया।

★ ★ ★

महिलाओं की क़ियामगाह के लिए गेस्ट हाऊस नंबर 1 और 2 को तैयार किया गया 6 राज्यों जम्मू कश्मीर, पंजाब, केराला, कर्नाटक, आंधरा प्रदेश और हिमाचल प्रदेश की मेहमान महिलाएं इस में सम्मिलित हुईं। 21 दिसंबर को मुआइना कारकुनान मुनाक़िद हुआ जिस में समस्त कारकुनात ने शिरकत की। नुमाइंदा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने महिलाओं की क़ियामगाह का भी जायज़ा लिया और ज़रूरी हिदायात से नवाज़ा। विभाग सैक्योरिटी के तहत गेट दारुल मसीह, गेट बहिश्ती मक़बरा, महिलाओं की क़ियामगाह और महिलाओं के जल्सा गाह में लजना इमाइल्लाह भारत के तहत सैक्योरिटी की डयूटियां दी जाती रहीं। नमाज़ों के समय में शिफ़्ट वाइज़ मस्जिद अक्सा की बेसमनट में मेम्बरात लजना इमाइल्लाह ने डयूटियां दीं। विभाग तिब्बी इमदाद के तहत होमियो डाक्टरज़ भी नमाज़ के समय में डयूटियां देती रहीं।

★ ★ ★

इस अवसर पर हिन्दुस्तान की जमाअतों से आए हुए मुबल्लग़ीन, उमरा किराम और सदर साहिबान के साथ श्रीमान नाज़िर आला साहिब और नायब नाज़िर आला साहिब दक्षिणी हिंद ने मीटिंग की और उन्हें ज़रूरी हिदायात से नवाज़ा। इसी तरह मेडिकल एसोसी एशन ऑफ़ इंडिया की भी एक मीटिंग आयोजित हुई जिसमें हिन्दुस्तान से आए हुए डाक्टर साहिबान शामिल हुए।

★ ★ ★

जलसे के अवसर पर अहबाब किराम की इच्छा होती है कि क़ादियान की मुक़द्दस बस्ती में उनके बच्चों के निकाहों के ऐलानात हों। इसलिए जलसे के दूसरे दिन बाद नमाज़ मग़रिब और इशा मस्जिद दारुल अनवार में निकाहों के ऐलानात हुए।

★ ★ ★

जलसा सालाना क़ादियान का एक अहम विभाग "विभाग ख़िदमत-ए-ख़लक़" भी है , जिसके तहत बुनियादी तौर पर नज़म ओ ज़बत और हिफ़ाज़ती डयूटियां दी

जाती हैं। इस वर्ष 500 सेवकों (ख़ुद्दाम) ने इस विभाग के तहत डयूटियां दी। अतिरिक्त इसके अंसार की एक टीम और लजना इमाइल्लाह की एक टीम भी विभाग ख़िदमत-ए-ख़लक़ के तहत ख़िदमात बजा ला रही थी। इस वर्ष हर मेहमान का विभाग ख़िदमत-ए-ख़लक़ के तहत covid test किया गया और नेगेटिव रिपोर्ट आने पर ही रजिस्ट्रेशन कार्ड ईशू किया गया जिसके बाद ही क़ियामगाह में जाने की इजाज़त दी जाती थी। ख़ुद्दाम ने नज़म ओ ज़बत की डयूटियां दीं दारुल मसीह, बहिश्ती मक़बरा, जलसा गाह, क़ादियान की समस्त मर्कज़ी मसाजिद और जुमला क़ियामगाहों और दाख़िली रास्तों पर ख़ुद्दाम की मुस्तक़िल डयूटियां लगाई गईं। इसी तरह अल् क़ुरआन नुमाइश, अल्नूर नुमाइश, मख़ज़ने तसावीर की जगहों पर और इसी तरह दारुल बेअत लुधियाना और मकान चिल्लाकशी होशियारपुर के स्थानों पर भी ख़ुद्दाम को डयूटियों पर निर्धारित किया गया। लोस्ट ऐंड फाउंड और ऐलानात का दफ़्तर भी क़ायम किया गया। फ़रस्ट ऐड और एमरजेंसी के लिए 24 घंटे एक dedicated team मौजूद थी जो मेहमानों को सहूलत और राहत पहुंचाने का काम कर रही थी मसाजिद, जलसा गाह और क़ियाम गाहों की सेनेटायज़ेशन और साफ़ सफ़ाई के लिए भी एक टीम ख़िदमत बजा ला रही थी।

अल्लाह तआला इस जलसा को बहुत ही ख़ैर ओ बरकत का माध्यम बनाए और समस्त कारकुनान कारकुनात और ख़िदमत करने वालों को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। आमीन।

★ ★ ★

पृष्ठ09 का शेष

और बहादुराना उत्तर का असर कुफ़्फ़ार के लश्कर पर इतना गहरा पड़ा कि अतिरिक्त बावजूद इसके कि उनकी उम्मीदें इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं और बावजूद इसके कि उनके सामने मुट्ठी भर घायल मुसलमान खड़े हुए थे जिन पर हमला करके उनको मार देना भौतिक कानून के लिहाज़ से बिल्कुल संभव था वह दुबारा हमला करने का साहस न कर सके और जिस क़दर फ़तह उनको नसीब हुई थी उसी की ख़ुशियां मनाते हुए मक्का को वापस चले गए।" (दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 52 से 253)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आयत اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ (आले इमरान :173) सहाबा के सम्बन्ध में है। कहती हैं कि ये सहाबा के सम्बन्ध में है अर्थात जिन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की बात मानी बाद उसके कि उनको ज़ख़म पहुंचे उनमें जिन्हों ने नेक काम किए और तक़्वा इख़्तियार किया उनके लिए बहुत बड़ा अज्र होगा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उर्वा से कहा हे मेरे भांजे तेरे ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु भी के बाप दादा उन्ही लोगों में से थे कि जब जंग अहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घायल हुए और मुशरेकीन पलट गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अंदेशा हुआ कहीं वे फिर न लौट आएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उनका पीछा कौन करेगा? तो उनमें से सत्तर आदमियों ने अपने आपको पेश किया। उर्वा कहते थे उनमें हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

(सही बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, बाब الذین استجابوا للہ والرسول... हदीस 4077)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं यह एक अजीब बात है कि बावजूद इसके कि क़ुरैश को इस अवसर पर मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़लबा हासिल हुआ था और ज़ाहिरी अस्बाब के लिहाज़ से वे जबकि चाहते तो अपनी इस फ़तह से फ़ायदा उठा सकते थे और मदीना पर हमला-आवर होने का रास्ता तो बहरहाल उन के लिए खुला था परन्तु ख़ुदाई तसर्रुफ़ कुछ ऐसा हुआ कि क़ुरैश के दिल बावजूद इस फ़तह के अंदर ही अंदर भयभीत थे और उन्हों ने इसी ग़लबा को ग़नीमत जानते हुए जो अहद के मैदान में उनको हासिल हुआ था मक्का को जल्दी जल्दी लौट जाना ही मुनासिब समझा परन्तु इसके अतिरिक्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मज़ीद सावधानी के ख़्याल से तुरन्त सत्तर सहाबा की एक जमाअत जिसमें हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे तैयार करके लश्कर क़ुरैश के पीछे रवाना कर दिए। यह बुख़ारी की रिवायत है। आम इतिहासकार यूं वर्णन करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु या कुछ रिवायत के अनुसार साद बिन वकास रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके पीछे भिजवाया और उन से फ़रमाया कि उन का पता लाओ कि लश्कर क़ुरैश मदीना पर हमला करने की नीयत तो नहीं रखता? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि अगर क़ुरैश ऊंटों पर सवार हों और घोड़ों को ख़ाली चला रहे हों तो समझना कि वे मक्का की तरफ़ वापिस जा रहे हैं। मदीना पर हमला आवर होने का इरादा नहीं रखते और अगर वे घोड़ों पर सवार हो तो समझना कि उनकी नीयत बख़ैर नहीं और आप ने उन को ताकीद फ़रमाई कि अगर क़ुरैश का लश्कर मदीना का रुख करे तो तुरन्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सूचना दी जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़े जोश की हालत में फ़रमाया कि अगर क़ुरैश ने इस वक़्त मदीना पर हमला किया तो ख़ुदा की क़सम हम उनका मुक़ाबला करके उन्हें इस हमला का मज़ा चखा देंगे। बहरहाल यह जो वफ़द गया था जल्द ही यह ख़बर लेकर वापस आ गया कि क़ुरैश का लश्कर मक्का की तरफ़ जा रहा है।

(उद्धरित सीरत खातमं नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 499-500)

यह वर्णन अभी इंशा अल्लाह तआला आगे भी चलेगा।

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

नतीजा निकलता है और वह यह कि दुनिया की हर चीज़ एक दूसरे से जुड़ी है और दुनिया बहुत से चीज़ों का मजमूआ नहीं बल्कि उसका इख़्तिलाफ़ ऐसा ही है जैसे एक ज़ंजीर की कड़ियाँ। अगर एक कड़ी निकाल दी जाए तो ज़ंजीर, ज़ंजीर नहीं रहती। इसी तरह कायनात में से एक चीज़ को निकाल दो सारी दुनिया तबाह हो जाएगी। समुंद्र ख़ुशक कर दो पानी ख़त्म हो जाएगा दरिया ख़ुशक कर दो समुंद्र ख़ुशक हो जाएगा। इस ढलान को जो दरियाओं के लिए रास्ता बनाता है दूर कर दो सब दुनिया पर पानी फैल जाएगा और ज़मीन रिहायश के काबिल नहीं रहेगी। पहाड़ मिटा दो ज़मीन पर भूकंप आएँगे और इन्सान हलाक हो जाएगा। दरियाओं के लिए पानी का ज़ख़ीरा बाक़ी नहीं रहेगा और वे सारा पानी यकदम समुंद्र में जा गिराएँगे अगर एक तरफ़ दुनिया सेलाब की नज़र होगी तो दूसरी तरफ़ साल भर तक पानी के मुहय्या रहने की सूरः मफ़क़ूद हो जाएगी। चांद सितारों को मिटा दो तो जो उनकी वजह से पैदाइश-ए-आलम पर प्रभाव है वह जाता रहेगा और ज़मीन अपनी हालत पर नहीं रहेगी। सूरज को अलग कर दो यह बादलों का सिलसिला जाता रहेगा और लोग पानी को तरस जाऐंगे और सबज़ियों का पकना बंद हो जाएगा और इन्सान की सेहत ख़राब हो जाएगी और उसकी हैवानी ग़िज़ा के पैदा होने की भी सम्भावना नहीं रहेगी। उद्देश ये सब कायनात मिलकर इन्सान की ख़िदमत कर रही है और उस का हर हिस्सा दूसरे हिस्सा के क़ियाम का माध्यम है। जब यह हाल है तो फिर दो ख़ुदा का अक़ीदा किस तरह दरुस्त हो सकता है। अगर दुनिया को कई ख़ुदाओं ने पैदा किया है तो वह कौन सा हिस्सा है जिसके बारह में कहा जा सकता है कि वह दूसरे से आज़ाद है कि समझा जा सके कि उसे किसी और ने पैदा किया होगा और अगर समस्त संसार एक ज़ंजीर की कड़ियों पर मुश्तमिल है तो इस का बनाने वाला एक ही ख़ुदा स्वीकार करना पड़ेगा। अतिरिक्त इसके कि यह कहा जाए कि ख़ुदा तआला में सब कायनात बनाने की क़ुदरत नहीं थी। इस लिए कई ख़ुदाओं ने मिलकर काम तक़सीम कर लिया और पहले से तजवीज़ करदा नक़्शा के अनुसार हर एक ने अपना अपना हिस्सा पूरा किया लेकिन यह अक़ीदा मुशरिकों का भी नहीं और है भी ख़िलाफ़ अक़ल क्योंकि नाक़िस वजूद ख़ुदा नहीं हो सकते। अतः इस दलील की मौजूदगी में एक ही नतीजा निकलता है कि اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ तुम्हारा ख़ुदा वही है जो एक है।

दूसरा मज़मून पहली आयात में यह बताया गया था कि वे सब वजूद जिनको ख़ुदा कहा जाता है फ़ौत हो चुके हैं। अतः जब वे फ़ौत हो चुके हैं तो फिर भी एक ही ख़ुदा बाक़ी रह जाता है जो मौत से बाला है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 151प्रकाशन 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 24 Fabruary 2022 Issue No.8

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया गेम्बया की सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल-मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

अलहमदु लिल्लाह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विनम्रतापूर्ण तिथि 14 फ़रवरी 2021 ई. दिन रविवार गेम्बया की नैशनल मज्लिस-ए-आमला को मुलाक़ात का सौभाग्य प्रदान किया। यह मुलाक़ात का हेडक्वार्टर टीलंडनग बांजल में मस्जिद बैतुस सलाम में हुई। मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल करने वालों में नैशनल मज्लिस-ए-आमला, रीजनल प्रैज़ीडैंट, एरिया मिशनरीज़ और हस्पतालों, स्कूल्ज़, प्रिंटिंग प्रैस के सरबराहान , ह्यूमैनिटी फ़रस्ट गेम्बया चैप्टर के चेयरमैन और नुसरत जहां स्कीम के सैक्रेटरी शामिल थे। दिन के अतिरिक्त बारह बजे शुरू होने वाली यह मुलाक़ात डेढ़ बजे के बाद समाप्त हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने मज्लिस-ए-आमला के अराकीन से उनका परिचय हासिल किया और उनके विभाग के सिलसिले में पूछ कर काम को दरुस्त और बेहतर ढंग में करने के विषय में मार्गदर्शन फ़रमाया।

इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने हस्पतालों और स्कूलज़ के सम्बन्ध में भी मार्गदर्शन फ़रमाया। तथा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने मुरब्बियान और मुबल्लग़ीन का मार्गदर्शन फ़रमाया कि उन्होंने कैसे जमाअत के लोग और ओहदेदारान की तर्बीयत करनी है। दौरान-ए-मुलाक़ात हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में एम.टी.ए गेम्बया, अहमदिया हस्पताल टीलंडनग हेडक्वार्टर, बैतुस सलाम कम्पलैक्स और अंतिम प्रिंटिंग प्रैस और वर्तमान दिनों में आने वाली फाईव कलर (five colour) प्रिंटिंग मशीन का परिचय दो वीडीयोज़ के साथ करवाया गया। मुलाक़ात के समापन पर अमीर जमाअत गेम्बया श्रीमान् बाबा एफ़. ट्रावले साहिब ने हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा किया और निवेदन किया कि कुछ नौजवान जो ख़ुद्दामुल अहमदिया की डयूटी कर रहे हैं और सेंट्रल स्टाफ़ के लोगों जिन में स्कूल्ज़ और प्रिंटिंग प्रैस में फ़रायज़ अदा करने वाले शामिल हैं वे भी हुज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में सलाम पेश करना चाहते हैं इसलिए ये सारे अहबाब मुलाक़ात के स्थान पर अंदर आ गए और हुज़ूर अनवर का दर्शन करके अपनी आँखों को ठंडा किया और दिल का सुकून पाया।

सब शामिल होने वालों ने मुलाक़ात के बाद एक दूसरे को मुबारक बाद दी कि आज बहुत समय बाद कई प्यासी रूहों को आक़ा का दीदार नसीब हुआ है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि जमाअत अहमदिया गेम्बया इस मुलाक़ात से पूर्णता लाभ उठाने वाली और इसकी बरकत से दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करने वाली हो। आमीन (सय्यद सईदुल हसन शाह, नायब अमीर तथा मुबल्लिग़ इंचार्ज गेम्बया) (धन्यवाद सहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 16 फ़रवरी 2021)

★ ★ ★

मुरब्बियान, ख़ुदा के साथ ज़िंदा सम्पर्क पैदा करने की कोशिश करें

कम से कम एक घंटा नमाज़ तहज्जुद अदा करें, अपनी रुहानी हालत को बेहतर करने की कोशिश करें

जमाअत अहमदिया जर्मनी के मुरब्बियान-ए-सिलसिला (फ़ील्ड मिशनरीज़) की

हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

जमाअत अहमदिया जर्मनी के फ़ील्ड में निर्धारति मुरब्बियान-ए-सिलसिला की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तिथि 15 नवंबर 2020 ई. को ऑनलाइन मुलाक़ात हुई। इस मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर ने मुरब्बियान-ए-किराम को मुख़्तलिफ़ हिदायात से नवाज़ा।

श्रीमान् सदाक़त अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जमाअत अहमदिया जर्मनी वर्णन करते हैं कि हुज़ूर अनवर की समस्त हिदायात ही हमारे लिए एक लाह-ए-अमल है। लेकिन ख़ाकसार जिस बात का विशेषता वर्णन करना चाहता है वह आपकी वह नसीहत है जिसमें आपने फ़रमाया कि मुरब्बियान ख़ुदा के साथ ज़िंदा सम्पर्क पैदा करने की कोशिश करें। कम से कम एक घंटा नमाज़ तहज्जुद अदा करें। अपनी रुहानी हालत को बेहतर करने की कोशिश करें। क़ुरआन की तिलावत और इस पर गौर करें क्योंकि यह रुहानी तबदीली जो हम अपने अंदर पैदा करेंगे आगे जमाअत के लोग की काया पलटने का माध्यम बनेगी।

एक और नसीहत जो हुज़ूर अनवर ने हमें फ़रमाई और जिसका वर्णन करना मैं ज़रूरी समझता हूँ क्योंकि इस पर अमल किए बग़ैर हमारी रुहानी ज़िंदगी की कोई ज़मानत नहीं वह यह है कि दरबार-ए-ख़िलाफ़त से जारी होने वाले हर हुक्म और हर हिदायत को मिन-ओ-अन हमने क़बूल करना है और इसके वास्तविक रूह को समझते हुए इस पर पूर्णता अमल करने की कोशिश करनी है। अपनी तरफ़ से न उसकी कोई व्याख्या करनी है और न कल्पना के आधार पर व्याख्या। और यही बात जमाअत के लोगों के दिलों में बिठाने की कोशिश करनी है। अल्लाह करे कि हम इस बात को ख़ुद भी समझने वाले हों और दूसरों को भी समझाने वाले हों। हुज़ूर अनवर की शफ़क़तों, इनायतों और बरकतों से भरपूर एक घंटे से कुछ ज़ायद वक़्त जो हमारे लिए इंतिहाई क़ीमती था बड़ी तेज़ी से गुज़र गया। हम ख़ुश हैं और हमारे दिल शुक्र की भावनाओं से भरे हैं और अपने निर्धारित कर्तव्यों की अदायगी के लिए हम अपने अंदर एक नया वलवला, नया जोश और शौक़ और नई ताक़त महसूस कर रहे हैं। ऐसे जैसे कि ख़ाली बैट्री को दुबारा चार्ज कर दिया जाए। मैं दर्द-ए-दल के साथ दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला हमारे प्यारे आक़ा की आयु और कार्य में बरकत प्रदान फ़रमाए और इस तरह के हसीन अवसर हमारे लिए पैदा फ़रमाता रहे। आमीन।

(रिपोर्ट : सय्यद सलमान अहमद शाह, मुरब्बी सिलसिला)

(धन्यवाद सहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 26 फ़रवरी 2021)

★ ★ ★

Z.A. Tahir Khan
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Z.A.TAHIR KHAN
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad